प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

तेरापंथ के 11वें अधिशास्ता 11 तारीख को 11 बजे 2011 का चातुर्मास घोषित किया केलवा में

सरदारशहर 11 जून, 2010

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण ने 11 जून की 11 बजे 2011 का चातुर्मास केलवा में करने की घोषणा की। उन्होंने यह घोषणा वहां के बड़ी संख्या में पहुंचे श्रावक समाज की जोरदार अर्ज पर मर्जी करते हुए की। उल्लेखनीय है कि पूर्व में 2008 का चातुर्मास आचार्य महाप्रज्ञ ने केलवा में करने की घोषणा की थी, पर अस्वस्थता की वजह से इस चातुर्मास को स्थगित कर दिया गया था। जिसे आचार्य महाश्रमण ने अपने पदाभिषक अवसर पर पुनः यथा संभव अवसर आने पर करने का इंगित किया था। उसी इंगित के अनुसार आचार्य महाश्रमण ने केलवा को प्राथमिकता देते हुए जैन विश्व भारती लाडनूं के चातुर्मास की जगह 2011 का चातुर्मास केलवा में करने की घोषणा की।

इससे पूव साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने अपनी दीक्षा भूमि एवं तेरापंथी की आदि भूमि केलवा को ऐतिहासि स्थल बताते हुए उसे चातुर्मास का हकदार ठहराया। उन्होंने इस मौके पर सिवांची मालाणी एवं जसोल वासियों की अर्ज को उचित बताया। चातुर्मास व्यवस्था समिति केलवा के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी, महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष देवीलाल कोठारी, महासभा सदस्य सम्पतलाल मादरेचा, भावेश मादरेचा, करूणा कोठारी, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मण्डल के कार्यकर्त्ताओं ने आचार्य महाश्रमण से केलवा में 2011 का चातुर्मास फरमाने का निवेदन किया। आचार्य महाश्रमण के द्वारा चातुर्मास की घोषणा के साथ ही केलवा वासियों ने कृतज्ञता एवं अभिनन्दन पत्र पूज्यप्रवर को भंट किया।

छापर चतुर्मास पर होगा पुर्नचिंतन

पूर्व में 2012 का छापर में घोषित चातुर्मास एवं 2011 के गंगाशहर में घोषित मर्यादा महोत्सव पर पुर्नचिंतन होगा। उक्त घोषणा करते हुए आचार्य महाश्रमण ने जसोल वासियों की अर्ज पर ध्यान देने का आश्वासन दिया। जसराज बुरड़, गौतम सालेचा, शंकरलाल ढेलड़िया, दीपचन्द बोरदिया आदि के नेतृत्व में पहुंचे प्रतिनिधि मण्डल ने आचार्य महाश्रमण से जसोल में चातुर्मास करने की अर्ज की। जिस पर आचार्य महाश्रमण ने कहा कि समय की अनुकूलता के अनुसार इस पर चिंतन किया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार ने किया।

हाजरी वाचन कार्यक्रम
'श्रमणोहं' को निरंतर स्मृति में रखें : आचार्य महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण ने हाजरी वाचन कार्यक्रम में सर्व साधु-साध्वियों को मर्यादाओं का पुनरावर्तन कराते हुए कहा कि 'श्रमणोहं' अर्थात् मैं श्रमण हूं इसकी स्मृति निरंतर बनी रहनी चाहिए। हमें केवल ग्रंथ पढ़ने ही नहीं उनको आचरण में भी उतारना है। जो धर्मग्रंथों को पढ़ने के साथ उसमें तादात्मय हो जाता है। उसकी शिक्षा को आचरण में उतारता है वह मुनि अप्रमत रह सकता है। उन्होंने कहा कि साधु दुनिया का सबसे बड़ा व्यक्ति होता है। उसके आगे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री पद की कोई मायने नहीं रखते।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि जिस निष्ठा के साथ घर से अभिनिष्क्रमण किया है वह निष्ठा हमेशा बनी रहनी चाहिए। उन्होंने साधु-साध्वियों को प्रतिक्रमण करने में जागरूकता रखने की प्रेरणा दी। इस मौके पर साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने भी संबोधित किया।

– **शीतल बरड़िया**
(मीडिया संयोजक)